साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 29 अप्रैल- 5 मई 2024 वर्ष-10, अंक-02

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठः-8,मूल्यः- 2 रुपए

किसानों को उपयोगी संसाधन खरीदने के लिए 50 हजार की सब्सिडी भी

- गुजरात की कंपनी ने प्रदेश सरकार को भेजा प्रस्ताव
- ग्वालियर, छतरपुर, उमरिया, उज्जैन में शुरू होगी खेती

मध्य प्रदेश में मीठी तुलसी की होगी कांट्रैक्ट फार्मिंग

भोपाल। जागत गांव हमार

मीठी तुलसी की खेती किसानों के जीवन में मिठास घोलने का काम करेगी, इससे किसानों की आय तो बढ़ेगी ही, साथ यह मधुमेह रोगियों की संख्या में कमी लाने का भी काम करेगी, क्योंकि सरकार अब इस दिशा में कदम उठाने जा रही है। हाल ही में उद्यानिकी विभाग के माध्यम से गुजरात की स्टीवियाटेक कंपनी ने शासन को एक प्रस्ताव भेजा है, जिसमें (पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप) पीपीपी माडल पर कांट्रेक्ट फार्मिंग को लेकर बात कही गई है, जो हर जिले में 100 किसान को उद्यानिकी विभाग की मदद से पौध व तकनीक उपलब्ध कराएगी। जब किसान फसल का उत्पादन कर लेगा तो कंपनी 120 रुपए प्रति किलो के हिसाब से तुलसी की सूखी पत्ती खरीदेगी। असल में मध्य प्रदेश सरकार नवाचार के रूप में यह कदम हर जिले में उठाने पर विचार कर रही है।

वर्ष	ग्वालियर	छतरपुर	उमरिया	उज्जैन
पहले वर्ष	100	100	100	100
दूसरे वर्ष	200	200	200	200
तीसरे वर्ष	200	200	200	200

गुजरात की कंपनी का प्रस्ताव पहुंचा है, जिस पर चुनाव के बाद निर्णय ले लिया जाएगा। किसान खेती के साथ प्रोसेसिंग यूनिट खुद लगा सकता है, जिससे उसकी आय बढ़ेगी।

- नारायण सिंह कुशवाह, उद्यानिकी मंत्री, मप्र

शुरुआत में 100 एकड़ में खेती

प्रस्ताव के मुताबिक शुरुआत में हर जिले में 100 एकड़ भूमि पर मीठी तुलसी की फसल पैदा कराई जाएगी। यह 100 एकड़ भूमि 100 किसानों को मिलाकर होगी। एक किसान एक एकड़ भूमि पर पैदावार करेगा, जिसके खेत पर तुलसी की पत्ती को सुखाने के लिए एक छोटा प्रोसेसिंग प्लांट लगाना होगा। उद्यानिकी विभाग इसमें मदद करेगा और खेती करने के लिए उपयोगी संसाधन के सिए 50 हजार रुपए की सब्सिडी भी देगा।

चार जिलों के लिए भेजा प्रस्ताव

मध्य प्रदेश में शुरुआती तौर पर चार जिले ग्वालियर, छतरपुर, उमरिया, उज्जैन में मीठी तुलसी की खेती कराई जाएगी, जिसे साल दर साल आगे बढ़ाया जाएगा। हर जिले में 500 किसान खेती करेंगे, क्योंकि कंपनी को हर साल 5 हजार किलो फसल की जरूरत है।

बोवनी एक बार, फसल मिलेगी 5 साल

उद्यानिकी विभाग के अधिकारी एमपीएस बुंदेला बताते हैं कि मीठी तुलसी की फसल की बोवनी एक बार करने पर उसकी फसल पांच साल तक ली जाती है, इसकी बोवनी हर साल नहीं करनी होती। तुलसी की फसल को अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती। सूखा पड़ने पर भी फसल जीवित रह सकती है। एक एकड़ भूमि में प्रति वर्ष 10 क्विंटल फसल की पैदावार किसान ले सकता है। मतलब एक एकड़ भूमि में सवा लाख तक की पैदावार ली जा सकती है।

केंद्र ने 372.9 लाख टन गेहूं खरीदने का टारगेट रखा

गेहूं खरीद में हरियाणा ने पंजाब-मप्र को छोड़ा पीछे

भोपाल। जागत गांव हमार

गेहूं की सरकारी खरीद अब तेज हो गई है। अब तक करीब 7 मिलियन टन यानी लगभग 70 लाख टन की खरीद हो चुकी है। न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदने के मामले में अब तक सबसे आगे रहे मध्य प्रदेश को अब हरियाणा ने पीछे छोड़ दिया है। हरियाणा 31,25,635 मीट्रिक टन गेहूं खरीद चुका है जबकि मध्य प्रदेश में 24 लाख 29,000 मीट्रिक टन की खरीद हुई है। पंजाब जहां पर सबसे ज्यादा गेहूं की खरीद का टारगेट दिया गया है वह इस मामले में अभी बहुत पीछे है। वहां पर अब तक सिर्फ 7,86,700 मीट्रिक टन ही गेहूं खरीदा गया है। पंजाब इस साल खरीद मामले में काफी सुस्त है। दूसरी ओर देश के सबसे बड़े गेहूं उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश में अब तक सिर्फ 3,24,000 मीट्रिक टन गेहूं ही खरीदा जा सका है। उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों में ओपन मार्केट में गेहूं का दाम एमएसपी से ज्यादा होने की वजह से लोग सरकारी खरीद केंद्रों पर किसान गेहूं बेचने से परहेज कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश को 60 लाख मीट्रिक टन गेहूं खरीदने का लक्ष्य मिला है। ऐसे में यह अभी भी लक्ष्य से बहुत पीछे है।

ज्यादा खरीद का है दबाव

केंद्र पर इस साल ज्यादा से ज्यादा गेहूं खरीदने का दबाव है, क्योंकि बफर स्टॉक में गेहूं 16 साल के सबसे निचले स्तर पर आ गया है। लेकिन पिछले 2 साल से सरकार गेहूं खरीद का लक्ष्य पूरा नहीं कर पा रही है, क्योंकि ओपन मार्केट में इसका दाम एमएसपी से ज्यादा रह रहा था। अभी भी गेहूं का दाम एमएसपी से ज्यादा चल रहा है, इसलिए बड़ा सवाल यह है कि क्या सरकार अपना खरीद का लक्ष्य पूरा कर पाएगी। सरकार ने 37.29 मिलियन टन (372.9 लाख टन) गेहूं खरीदने का लक्ष्य रखा है।

कम गेहूं खरीद वाले सूबे

बिहार में अब तक सिर्फ 3310 मीट्रिक टन गेहूं खरीद गया है, झबकी सरकार ने 2 लाख मीट्रिक टन का लक्ष्य दिया है। उत्तराखंड में 102 टन की खरीद हुई है, जबकि 50 हजार मीट्रिक टन का लक्ष्य है। राजस्थान में 20 लाख टन का लक्ष्य है, जबकि अब तक महज 1 लाख 34 हजार मीट्रिक टन की ही खरीद हो सकी है। हिमाचल प्रदेश में सिर्फ 193 मीट्रिक टन की खरीद हो पाई है। फिलहाल, सरकार को उम्मीद है कि इस साल कई राज्य अपने खरीद लक्ष्य को पूरा करेंगे। पिछले साल एक भी राज्य अपने तय टारगेट जितना गेहूं नहीं खरीद पाया था।

सरकार ने सिकुड़े दानों की मात्रा 6 से बढ़ाकर 15 फीसदी की, राज्यों के किसानों को अब नहीं उठाना पड़ेगा नुकसान

मध्यप्रदेश-राजस्थान में गेहूं खरीद के नियमों में केंद्र ने दी ढील

भोपाल। जागत गांव हमार

एमएसपी पर गेहूं की खरीद जारी है। इस साल गेहूं की सरकारी खरीद कई मोर्चो पर चुनौतीपूर्ण बनी हुई है। असल में गेहूं का स्टॉक 1 अप्रैल को बफर स्टॉक से थोड़ा सा ही अधिक था। ऐसे में इस साल गेहूं खरीद का लक्ष्य पूरा करना महत्वपूर्ण है। जिसके तहत 320 लाख मीट्रिक टन खरीद का लक्ष्य रखा गया है, लेकिन गेहूं खरीद की जारी प्रक्रिया के बीच मौसम में हुए बदलाव ने किसानों और सरकारों को मुश्किल बढ़ाई है। मसलन, बारिश और लू से गेहूं की फसल को नुकसान होने की संभावना बनी है। जिसे देखते हुए केंद्र सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया है। इसी कड़ी में केंद्र सरकार ने गेहूं खरीद के नियमों में ढील दी है। एफसीआई की तरफ से एमएसपी पर गेहूं खरीद के नियमों को लेकर मध्य प्रदेश और राजस्थान को छूट दी गई है। इन दोनों राज्यों के किसानों को गेहूं खरीद के नियमों में छूट मिलेगी। गेहूं खरीद के बदले नियमों के तहत मध्य प्रदेश में सिकुड़े दानों की मात्रा 6 फीसदी से बढ़ाकर 15 फीसदी कर दी गई है। इसी तरह राजस्थान में 20 फीसदी सिकुड़े दानों के साथ गेहूं की खरीदारी होगी। हालांकि टूटे हुए दानों की मात्रा 6 फीसदी रखी गई है। वहीं मध्य प्रदेश में गेहूं की चमक 50 फीसदी और राजस्थान में 70 फीसदी कर दी गई है। अब, मध्य प्रदेश में 50 फीसदी और राजस्थान में 70 फीसदी चमक वाले गेहूं को पूरी एमएसपी दी जाएगी।

दोनों ही राज्यों में 2400 रुपए क्विंटल

दोनों ही राज्यों में गेहूं की सरकारी खरीदारी 2400 रुपए प्रति क्विंटल हो रही है। असल में विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा ने दोनों ही राज्यों से 2700 रुपए क्विंटल पर गेहूं की खरीदारी करने का वादा किया था। इसी क्रम में सरकार बनने बाद दोनों ही राज्यों की सरकार ने गेहूं की एमएसपी 2275 रुपए पर 125 रुपए का बोनस देने की घोषणा की है। जिसके तहत 2400 रुपए क्विंटल पर गेहूं की खरीदारी हो रही है।

गेहूं खरीद के नियम

एमएसपी पर गेहूं खरीद के नियम बने हुए हैं, जिसके तहत एमएसपी पर गेहूं खरीद के लिए नमी, चमक, सिकुड़े और टूटे दानों, गेहूं में दूसरी फसलों के दानों की मात्रा जैसे नियमों का पालन किया जाता है। एफसीआई ने एमएसपी पर गेहूं खरीद के लिए नमी की मात्रा 12 से 14 फीसदी तक रखी है। इससे अधिक नमी होने पर गेहूं की खरीदी नहीं होती है। वहीं एक क्विंटल यानी कुल फसल में 6 फीसदी सिकुड़े या टूटे गेहूं के दाने की मात्रा निर्धारित की गई है। इसी तरह एमएसपी पर बिकने आए गेहूं में दूसरे अनाजों की मात्रा 0.75 फीसदी से अधिक नहीं होनी चाहिए। वहीं चमक को लेकर भी नियम बने हुए हैं। गेहूं की चमक में 90 फीसदी होने पर एमएसपी पूरा देने का प्रावधान है।

कर्नाटक में सर्वाधिक गांव स्तरीय सॉइल टेस्ट लैब

तेलंगाना: उपज बढ़ाने में मददगार 2050 मिनी लैब

खेतों की मिट्टी जांचने में आगे कर्नाटक के किसान

भोपाल। जागत गांव हमार

फसलों की ज्यादा उपज के लिए जिस तरह से उर्वरक-कीटनाशक, बोवनी-सिंचाई का समय और मौसम जरूरी होता है, ठीक उसी तरह खेत की मिट्टी की पोषकता भी बहुत जरूरी होती है। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने अर्थ डे के मौके पर अपील करते हुए मिट्टी की पोषकता बढ़ाने पर जोर दिया है। गांव स्तर पर मिट्टी की पोषकता जांचने में कर्नाटक के ग्रामीण आगे हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने विश्व पृथ्वी दिवस कहा कि पृथ्वी को प्रदुषण रहित रखना हम सभी का कर्तव्य है। एक अनुमान के मुताबिक 90 प्रतिशत प्लास्टिक रिसाइकिल नहीं हो पाती है जो पर्यावरण और खेती के लिए घातक है। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण में असंतुलन बढ़ रहा है जिसकी वजह से स्थिति दयनीय होती जा रही है। लगातार वृक्षों की कटाई, रासायनिक खाद व कीटनाशकों का अत्याधिक प्रयोग व प्लास्टिक के प्रयोग से हमारी धरती का स्वरूप एवं पर्यावरण दूषित होता जा रहा है। मिट्टी की पोषकता में लगातार कमी आ रही है।

किसान प्लास्टिक का यूज बंद करें

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने मिट्टी की पोषकता बढ़ाने पर जोर दिया है। मंत्रालय ने कहा कि इस अर्थ डे पर प्लास्टिक प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई में शामिल हों। अपील करते हुए कहा कि आइए टिकाऊ प्रथाओं के लिए प्रतिबद्ध होकर जीवन के हर क्षेत्र में विशेषकर कृषि क्षेत्र में ग्रह चुनें। अपनी मिट्टी को उपजाऊ और अपने ग्रह को स्वस्थ बनाए रखने के लिए बायोडिग्रेडेबल विकल्प चुनें, स्थानीय किसानों का समर्थन करें और प्लास्टिक को ना कहें।

कर्नाटक में सर्वाधिक लैब

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के दिसंबर 2023 के आंकड़े बताते हैं कि खेतों की मिट्टी की जांच के लिए गांव स्तर पर सर्वाधिक सॉइल टेस्ट लैब कर्नाटक में 291 हैं। इस वजह से यहां के किसान अपने खेतों की मिट्टी की जांच कराने में भी आगे हैं। इसके बाद नागालैंड में 74 और बिहार में 72 गांव स्तरीय सॉइल टेस्ट लैब हैं। वहीं, मिट्टी की जांच के लिए सबसे ज्यादा 2050 मिनी लैब तेलंगाना में हैं। इसके बाद आंध्र प्रदेश में 1328 और झारखंड में 1300 मिनी सॉइल टेस्ट लैब हैं। जबकि, राज्य स्तरीय स्टेटिक लैब की संख्या सबसे ज्यादा महाराष्ट्र में 213 है।

24 करोड़ सॉइल हेल्थ कार्ड

कृषि मंत्रालय के अनुसार मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजनाएं लागू कर की हैं। मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों को उनकी मिट्टी में पोषक तत्वों की स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इसके साथ ही मिट्टी के स्वास्थ्य और इसकी उत्पादकता में सुधार के लिए लागू किए जाने वाले पोषक तत्वों की सही खुराक पर सलाह भी देता है। दिसंबर 2023 तक किसानों को 23.58 करोड़ मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किये जा चुके हैं।

योजना सलाहकार ने कहा- इस्तेमाल करना आसान

पीएम किसान एआई चैटबॉट अन्नदाताओं का मददगार

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 17वीं किस्त का लाभार्थी किसानों को इंतजार है। बीते दिनों केंद्र सरकार किसानों की मदद के लिए एआई चैटबॉट को 11 भाषाओं में उपलब्ध करा दिया है। पीएम किसान एआई चैटबॉट की मदद से 30 लाख से अधिक किसानों को अपनी किस्त का पैसा पाने में मदद मिली है। पीएम किसान सम्मान निधि के बारे में योजना के सलाहकार मनोज गुप्ता ने मोबाइल एप्लीकेशन को डाउनलोड करने की सलाह दी है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अनुसार 30 लाख से अधिक किसानों ने पीएम किसान एआई चैटबॉट (किसान ई-मित्र) का उपयोग किया है, जिससे उन्हें तुरंत लाभ मिला है। पीएम किसान एआई चैटबॉट(किसान ई-मित्र) के माध्यम से अब देश के किसान 11 भाषाओं में पीएम किसान सम्मान निधि योजना से जुड़े हर सवाल का जवाब अपने मोबाइल फ़ोन पर ही प्राप्त कर सकते हैं। इससे किसानों को केवाईसी, डॉक्यूमेंट और पात्रता समेत कई तरह की परेशानियों को चुटकियों में हल करने में मदद मिली है।

पीएम किसान सम्मान निधि योजना के सलाहकार मनोज गुप्ता ने किसानों से कहा कि योजना का लाभ लेने के लिए किसान अपने स्मार्टफोन के गूगल प्लेस्टोर पर जाएं और वहां से पीएम किसान एआई चैटबॉट (किसान ई-मित्र) मोबाइल एप्लीकेशन को डाउनलोड कर लें। एप्लीकेशन के एआई चैटबॉट पर क्लिक करें और वहां दिए गए सवाल के ऑप्शन को अपने हिसाब से सेलेक्ट कर जवाब हासिल कर लें। इसे इस्तेमाल करना काफी आसान है। इससे पीएम किसान योजना के लाभार्थियों को बड़ी मदद मिल रही है।

अब 17वीं किस्त मिलेगी

पीएम किसान सम्मान निधि की 16वीं किस्त प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 फरवरी 2024 को जारी की थी। तब 9 करोड़ से अधिक लाभार्थी किसानों के खाते में 21,000 करोड़ रुपए से अधिक राशि जारी की गई थी। बता दें कि पीएम किसान योजना के अनुसार हर चार महीने में यानी हर साल तीन किस्तों में अप्रैल-जुलाई, अगस्त-नवंबर और दिसंबर-मार्च में किस्त जारी की जाती है। चूंकि 16वीं किस्त फरवरी में जारी की गई थी, इसलिए 17वीं किस्त मई में किसी भी समय आने की उम्मीद की जा सकती है। हालांकि, 17वीं किस्त जारी होने की तारीख तय नहीं है।

पोर्टल पर ई-केवाईसी करें

प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) देश के सभी भूमिधारक किसानों के परिवारों को कृषि और उससे जुड़े कार्यों के लिए वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के इरादे से आय सहायता देना है। इसके तहत योग्य किसानों को हर चार महीने में 2,000 रुपए मिलते हैं, कुल मिलाकर 6,000 रुपए सालाना लाभार्थी किसानों को दिए जाते हैं। पीएम किसान वेबसाइट के अनुसार पंजीकृत किसानों को किस्त पाने के लिए केवाईसी अनिवार्य है। ओटीपी आधारित ईकेवाईसी पीएमकिसान पोर्टल पर उपलब्ध है या बायोमेट्रिक आधारित ईकेवाईसी के लिए निकटतम सीएससी केंद्रों से संपर्क किया जा सकता है। ध्यान दें कि यदि परिवार का कोई सदस्य पिछले मूल्यांकन वर्ष में आयकर दाता है, तो वे योजना के लाभ के लिए पात्र नहीं हैं।

फसल खराब होने से मिलेगी निजात, उपज बढ़ेगी

खरीफ सीजन में फसलों को बीमारियों से बचाएंगे 16 नए एग्री सॉल्यूशन

भोपाल। जागत गांव हमार

खरीफ सीजन में फसल बोवनी के लिए किसानों की कृषि समस्याओं को दूर करने के लिए चेन्नई स्थित ट्रॉपिकल एग्रोसिस्टम (इंडिया) 16 नए एग्री सॉल्यूशन लेकर आई है। यह सॉल्यूशन किसानों को बीज सुधार से लेकर फसल कटाई के बाद तक की दिक्कतों को दूर करने में मददगार साबित होंगे। इनमें पौधों-फलों में फंगल इंफेक्शन, कीटनाशक-उर्वरक समेत कई अन्य समाधान शामिल होंगे, जो फसल की पैदावार से लेकर स्टोरेज तक की समस्या को हल करने में मदद करेंगे। एग्री सेक्टर में फसल सुरक्षा पर काम करने वाली चेन्नई स्थित कंपनी ट्रॉपिकल एग्रोसिस्टम जून से शुरू होने वाले खरीफ फसल सीजन के दौरान बीज उपचार से लेकर फसल के बाद की देखभाल तक 16 नए कृषि समाधान पेश करेगी। कंपनी ने कहा कि कृषि समाधानों में चार फंगल रोधी, चार हर्बीसाइड, सात कीटनाशक और एक उर्वरक मैग्नीशियम हाइड्रॉक्साइड और जिंक फॉस्फेट शामिल हैं। इनका इस्तेमाल सभी फसलों पर फूल और फल की क्वालिटी और उपज में सुधार के लिए किया जा सकता है।

कंपनी लाई 16 नए एग्री सॉल्यूशन

ट्रॉपिकल एग्रोसिस्टम (इंडिया) के संस्थापक वीके झावेर ने कहा कि उनकी कंपनी कीट, बीमारियों और मिट्टी की कमियों जैसे फसल संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए किसानों को हाईटेक फॉर्मूलेशन उपलब्ध कराती है। कंपनी के प्रोडक्ट को उड़द, मिर्च, जीरा, आलू, धान, टमाटर, गेहूं, मक्का, कपास, चना, मूंगफली, अरहर, सोयाबीन, गन्ना से लेकर चाय और पत्तागोभी जैसी फसलों की समस्याओं को दूर करने के लिए 16 नए एग्री सॉल्यूशन को तैयार किया गया है।

फसल की कई बीमारियों को दूर करेंगे सॉल्यूशन

कंपनी ने कहा कि नए एग्री सॉल्यूशन में किसानों की जरूरतों को पूरा करने वाले कीटनाशक, कवकनाशी और जैविक प्रोडक्ट हैं। कंपनी के अनुसार पाउडरयुक्त फफूंदी, फलों की सड़न, अल्टरनेरिया ब्लाइट, तने की सड़न, पत्तियों और फलों पर धब्बा, चने पर काला धब्बा रोकने के लिए सात्यूशन पेश किया जा रहा है। इसके अलावा अगेती और देर से होने वाला ब्लाइट रोग, सेठ ब्लाइट, मिर्च, जीरा, धान, टमाटर, गेहूं और आलू जैसी फसलों में पीला रतुआ रोग से निपटने के लिए भी समाधान पेश किए जा रहे हैं।

किसानों को इनसे भी राहत मिलेगी

सफेद मक्खी, ब्राउन प्लांट हॉपर, थ्रिप्स, लीफ हॉपर, एफिड्स, पॉड बोरर, स्पोडोप्टेरा लिटुरा, डायमंडबैक मोथ, फ्रूट बोरर, अमेरिकन बॉलवर्म, स्टेम बोरर, लीफ फोल्डर, सेमी लूपर, हेलिकोवर्पा आर्मिगेरा के प्रभाव को रोकने में मदद मिलेगी। इसके अलावा अर्ली शूट बोरर, माइट्स, क्लोरिस बारबटा, पार्थेनियम और खरपतवार की रोकथाम भी होगी। जबकि, किसानों को कपास, धान, मिर्च, पत्तागोभी, गन्ना, बंगाल चना, काला मटपे,मूंगफली, अरहर, सोयाबीन, चाय और टमाटर सहित अन्य फसलों में कीटनाशकों के छिड़काव से भी राहत मिलेगी।

तिल उत्पादक राज्य: महाराष्ट्र, राजस्थान, बंगाल, आंध्र प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और तेलंगाना

कानपुर के चंद्रशेखर आजाद कृषि विवि में चल रहा शोध कार्य

मध्यप्रदेश की तर्ज पर अब उत्तर प्रदेश में भी होगी गर्मी वाली तिल की खेती

भोपाल। जागत गांव हमार

उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए बेहद खुशखबरी वाली खबर सामने आई है। कानपुर के चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में एक नया शोध कार्य किया जा रहा है। जिसमें तिल की फसल को गर्मियों में उगाई जाने की तैयारी की जा रही है। क्योंकि तिल की फसल बेहद प्रॉफिट वाली होती है और अगर गर्मी और सर्दी दोनों सीजन में तिल की खेती की जा सकेगी तो किसानों को इसका सीधा लाभ होगा। किसानों के सामने अपनी आय को बढ़ाने का अच्छा मौका होगा। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के प्रभारी प्रो. राम बटुक सिंह ने बताया कि सीएसए विवि लगातार किसानों के लिए फसल करने के नए-नए तरीके को नई-नई फसलों के लिए काम कर रहा है। इसी क्रम में पहली बार यहां पर तिल की फसल को गर्मियों में उगाने का काम किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अगर यह प्रयोग सफल रहा तो उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए यह बेहद फायदेमंद होगा। गर्मी और सर्दी दोनों सीजन में तिल की फसल उगाकर किसान अच्छा मुनाफा कमा सकेंगे।

मप्र से मंगाए 16 प्रजातियों के बीज

प्रोफेसर राम बटुक सिंह ने बताया कि गर्मी के मौसम में तिल को उगाने के लिए वैज्ञानिकों ने खास तैयारी की है। मध्य प्रदेश से 16 तक के प्रजातियों के बीज मंगाए गए हैं। यहां पर प्रयोगशाला को 16 भाग में डिवाइड करके हर भाग में अलग प्रजाति का सीड लगाया गया है। इसमें सफेद और काले तिल दोनों शामिल है अब वैज्ञानिक इसकी लगातार स्क्रीनिंग कर रहे हैं कि किस प्रकार से फसल बढ़ रही है। यह फसल लगभग 75 से 80 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसको लगे एक महीने से अधिक का समय हो चुका है। ऐसे में आने वाले वक्त में इसके परिणाम क्या होंगे ये एक शोध का विषय होगा।

मध्य प्रदेश में सबसे अधिक तिल की खेती

प्रो. राम बटुक सिंह बताते हैं कि मध्य प्रदेश में सबसे अधिक तिल की फसल होती है। वहां पर ग्रीष्मकाल में भी तिल की फसल की जाती है। उसी की तर्ज पर अब यहां पर भी गर्मी में तिल की फसल को उगाई जाने की तैयारी की गई है। इसके लिए खास बीज मध्य प्रदेश से मंगाए गए हैं। जिनको चंद्रशेखर आजाद कैसी विश्वविद्यालय की प्रयोग भूमि में लगाया गया है। तिल का प्रयोग अधिकतर तेल बनाने में किया जाता है। तिल की खेती महाराष्ट्र, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और तेलंगाना में बड़े पैमाने पर की जाती है।

गर्मी का मौसम अनुकूल

प्रो. राम बटुक सिंह ने आगे बताया कि जलवायु की दृष्टि से तिल के लिए लंबे गर्म मौसम वाली उष्ण कटिबंधीय जलवायु की आवश्यकता होती है। यह पौधा गर्म जलवायु में उगता है। इसकी खेती अच्छे जल निकास वाली भूमि में करनी चाहिए, इसके लिए वर्षा जल की आवश्यकता नहीं होती है, इसकी बोवनी सामान्य पीएच मान वाली भूमि में करनी चाहिए, पौधे की अधिक वृद्धि के लिए 25 से 27 डिग्री तापमान अच्छा होता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि इसकी पौधे 40 डिग्री का सामान्य तापमान आसानी से सहन कर सकते हैं।

बलुई दोमट मिट्टी

उन्होंने बताया कि वैसे तो तिल की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन अधिक उपज पाने के लिए किसान इसे बलुई दोमट मिट्टी में बोते हैं जिसमें जीवाश्म अधिक होते हैं जो तिल की खेती के लिए अच्छी होती है।

-कर्नाटक समेत अन्य प्रमुख राज्यों में गिरावट

यूपी और महाराष्ट्र में चीनी उत्पादन बढ़ा

भोपाल। जागत गांव हमार

चीनी उत्पादन सीजन 2023-2024 के दौरान देशभर में चीनी उत्पादक के आंकड़ों में बीते साल की समान अवधि की तुलना में 2 लाख टन की गिरावट दर्ज की गई है। चीनी उत्पादन में उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र ने बीते चीनी उत्पादन के आंकड़ों को पार कर लिया है। जबकि, कर्नाटक, गुजरात समेत अन्य प्रमुख चीनी उत्पादक राज्यों में उत्पादन आंकड़ा नीचे खिसक गया है। ताजा आंकड़े जारी होने के बाद बाजार में चीनी की उपलब्धता को लेकर फैला संशय दूर हो गया है। चीनी उत्पादक बॉडी ने कीमतों और उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ने की उम्मीद जताई है। भारतीय चीनी और बॉयो एनर्जी निर्माता संघ ने चीनी उत्पादन सीजन 2023-24 के आंकड़े जारी कर दिए हैं। चीनी संघ के अनुसार मौजूदा 2023-24 चीनी सीजन में शुद्ध चीनी उत्पादन 310.93 लाख टन तक पहुंच गया है, जबकि पिछले साल इसी तारीख को 312.38 लाख टन का उत्पादन हुआ था। इस हिसाब से करीब 2 लाख टन कम उत्पादन रहा है।

बंद चीनी मिलों की संख्या 444 के पार

चीनी संघ ने कहा कि इस वर्ष अप्रैल के पहले पखवाड़े में चीनी मिलों के बंद होने की गति पिछले वर्ष की तुलना में बहुत अधिक रही है। तुलनात्मक रूप से पिछले वर्ष की बंद 55 मिलों की तुलना में इस अवधि के दौरान 128 मिलों ने अपना परिचालन बंद कर दिया। कुल मिलाकर देश भर में 448 मिलों ने अपना पेराई कार्य पूरा कर लिया है। जबकि, पिछले साल 401 मिलें बंद थीं। चीनी संघ ने उत्पादन की गति बनी रहने और पिछले साल के बराबर उत्पादन का अनुमान जताया है।

दो राज्यों ने पिछला उत्पादन रिकॉर्ड पीछे छोड़ा

प्रमुख चीनी उत्पादक 5 राज्यों में यूपी और महाराष्ट्र ने उत्पादन आंकड़ा बीते साल की समान अवधि तक से पार कर लिया है। जबकि, बाकी 3 राज्यों ने बीते साल से कम उत्पादन दर्ज किया है। उत्तर प्रदेश ने 101.45 लाख टन चीनी उत्पादन किया है, जो अप्रैल 2023 तक 96.70 लाख टन चीनी उत्पादन से करीब 4 लाख टन अधिक है। इसी तरह महाराष्ट्र 109.20 लाख टन उत्पादन दर्ज किया है, जो बीते साल की समान अवधि के उत्पादन आंकड़े 105.90 लाख टन से करीब 4 लाख टन अधिक है।

कर्नाटक में उत्पादन घटा

कर्नाटक, गुजरात और तमिलनाडु का चीनी उत्पादन कम दर्ज किया गया है। कर्नाटक ने 50.60 लाख टन चीनी उत्पादन किया है, जो बीते साल की समान अवधि के आंकड़े 54.95 लाख टन से करीब 4 लाख टन कम है। इसी तरह गुजरात ने 9.19 लाख टन उत्पादन किया है, जो बीते साल की समान अवधि में दर्ज 9.98 लाख टन के उत्पादन से कम है। वहीं, तमिलनाडु ने 8.60 लाख टन चीनी उत्पादन किया है, जो बीते साल की समान अवधि के आंकड़े 10.10 लाख टन से कम है। इसके अलावा अन्य राज्यों ने 31.89 लाख टन चीनी का उत्पादन किया है, जो बीते साल की समान अवधि के उत्पादन आंकड़े 34.75 लाख टन से कम है।

सिंचाई के लिए जरूरी है इतने दिनों का अंतराल

मूंग की फसल में किसान खाद करें उपयोग

भोपाल। जागत गांव हमार

किसानों ने मूंग की खेती शुरू कर दी है। मूंग की फसल में अच्छी पैदावार करने के लिए उसमें कौन सी खाद डालना चाहिए। इसका किसान भाइयों में बहुत अधिक कंफ्यूजन रहता है। आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि मूंग की फसल के लिए कौन से पोषक तत्व जरूरी हैं, जिससे कि किसानों को अच्छी पैदावार मिल सके और अच्छी आमदनी हो। मूंग की खेती से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए किसान भाई इन उर्वरकों का इस्तेमाल करें, जिससे कि उनकी फसल में अच्छी पैदावार हो सके। अगर आप ने एक हेक्टर जमीन में मूंग की खेती करनी है तो बीज बुवाई से पहले नाइट्रोजन 20 किलोग्राम और सल्फर 50 किलोग्राम और डायअमोनियम फास्फेट डीएपी खाद भी देना चाहिए। साथ ही 20 किलो के हिसाब से पोटाश भी डालना चाहिए। टेक्नोजेड खाद आधुनिक ओआरटी तकनीक आधारित सूक्ष्म कणों द्वारा तैयार किया जिंक उर्वरक है। इस में जिंक ऑक्साइड 14व्व और सल्फर 67 प्रतिशत डब्ल्यूडीजी पाया जाता है। मूंग के पौधे की जड़ो अधिक जिंक अवशोषित करती है। इस लिए इन खाद की कम मात्रा में भी अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है। सल्फर पौधे को प्रोटीन, क्लोरोफिल, एंजाइम गतिविधि यह मूंग की फसल में उत्पादन बढ़ाने का कार्य करता है। सल्फर में एमिनो एसिड और विटामिन का घटक पाया जाता है। मूंग के पौधे को सल्फर की कमी होने से पौधे की विकास रुकजाती है और उत्पादन भी कम प्राप्त होता है। इन से उत्पादन की क्वालिटी भी अच्छी होती है।

मूंग में कितनी सिंचाई करें

मूंग की फसल में पानी की कम आवश्यकता होती है। ग्रीष्मकालीन मूंग फसल की अच्छी वृद्धि व विकास के लिए 3 से 4 सिंचाई की आवश्यकता होती है। अनावश्यक रूप से सिंचाई करने पर पौधे की वानस्पतिक वृद्धि ज्यादा हो जाती है, जिसका उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अत: सिंचाई आवश्यकतानुसार व हल्की करें। ऐसे किसान जिन्होंने पिछले महीने मूंग की बुआई कर दी है वे किसान 25 से 30 दिन की फसल हो जाने पर पहली सिंचाई करें।

फर्टिस और टेक्नोजेड़ जरूरी

मूंग की खेती में यह खाद डाल के अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इन्हें एक एकड़ के हिसाब से टेक्नोज़ेड 4 किलोग्राम और फर्टिस 6 किलोग्राम के दर से देना चाहिए। मूंग की उन्नत किस्में के बीज बुवाई के बाद जब फसल 20 से 25 दिन की हो जाए तब 3 किलोग्राम फर्टिस और बाकि 3 किलोग्राम जब फसल 45 से 50 दिन की हो जाए तब डाले और यह टेक्नोजेड़ को आप 4 किलोग्राम की मात्रा जब फसल 25 से 30 दिन की हो जाए तब देना चाहिए।

जमीन की उर्वरता बढ़ाने हरी खाद जरूरी, जानें कैसे होगा लाभ

डा. मनोज कुमार
कृषि वैज्ञानिक, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या।

खेती के दौरान किसानों को जमीन की उर्वरता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जमीन जितनी उर्वर होगी, फसल का उत्पादन भी उतना ही अच्छा होगा। किसान अपनी जमीन की उर्वरता बढ़ाने हरी खाद का इस्तेमाल कर सकते हैं। कृषि वैज्ञानिकों की मानें तो मिट्टी में सल्फर, जिंक सल्फेट की कमी को पूरा करने के लिए किसान ढैंचा बोकर हरी खाद बनाएं। वैज्ञानिकों का कहना है कि ऐसा करने से खेत में जीवांश की मात्रा में बढ़ोतरी होगी। जमीन की उर्वरा क्षमता को बढ़ाने के लिए खाली खेतों में ढैंचा समेत कई तरह की तिलहनी फसले फायदेमंद होती है।

दरअसल हरी खाद वह होती है जो कि खेती मिट्टी में पोषक तत्वों को बढ़ाने और उसमें जैविक पदार्थों की पूर्ति को करने के लिए की जाती है। देशभर में रासायनिक खादों का सबसे ज्यादा इस्तेमाल हो रहा है, जिसके कारण खेतों में जिंक सल्फेट और सल्फर की कमी भी खेतों में नजर आने लगी है। इस कमी को पूरा करने ढैंचा की फसल को लगाने का कार्य कर रहे हैं।

बुवाई का समय: हमारे देश में कई तरह की जलवायु पाई जाती हैं। सभी को अपने क्षेत्र के अनुसार फसल का चयन और बुवाई करनी चाहिए। फसल की बुवाई बारिश होने के तुरंत बाद कर देनी चाहिए। अगर खेत में सिंचाई की सुविधा है, तो हरी खाद की बुवाई बारिश के शुरू होने से पहले कर दें। हरी खाद के लिए फसल की बुबाई करते वक्त खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।

ढैंचा की उन्नत किस्में: सीएसडी 137, सीएसडी123, पन्त ढैंचा-1, पंजाबी ढैंचा-1, हिसार ढैंचा-1।

खाद तैयार करने की विधि: गेहूं कटाई के बाद अप्रैल से मई के बीच खेत की सिंचाई कर पानी में ढेंचा का बीज बो दें। बाद में 10 से 15 दिनों में ढेंचा फसल की हल्की सिंचाई कर लें। खेत में करीब 20 दिनों में 25 कि। प्रति है। की दर से यूरिया को छिड़क दें। इससे नोडयूल बनने में सहायता मिलती है। करीब 55 से 60 दिनों में हल चला दें। बीज को छिड़कते है।

इसके लिए सबसे पहले बीज को जुताई करके छिड़क दिया जाता है। ढैंचा के हरी खाद को प्रति हेक्टेयर 60 किलो बीज की काफी जरूरत होती है। इसमें मिश्रित फसल के अंदर 30 से 40 किलो बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। यह वास्तव में किसानों के लिए काफी ज्यादा फायदेमंद होता है। ढैंचा के पौधों का इस्तेमाल भी हरी खाद को तैयार करने में भी किया जाता है। हरे पौधे को बिना सडा गलाकर जब भूमि में नाइट्रोजन और जीवांश की मात्रा बढ़ाने के लिए खेत में जुताई के माध्यम से दबाया जाता है तो इस क्रिया को हरी खाद बनाना कहा जाता है।

ढैंचा की हरी खाद: हरी खाद बनाने के लिए ढैंचा की बुवाई बारिश के मौसम में की जाती है। इसके पौधे को किसी भी तरह की जलवायु और मिट्टी में उगाया जा सकता है। इसकी खेती जल भराव वाली जगह पर भी की जा सकती है। क्योंकि इसका पौधा 60 सेंटीमीटर पानी भराव में भी आसानी से विकास कर लेता है।

ढैंचा की खाद से मृदा में लाभ: इसकी एक से डेढ़ महीने की खेती से ही 20-25 टन हरी खाद और 85-100 किलो तक नाइट्रोजन भूमि को मिल जाती है। जिससे खेत की उर्वरक क्षमता काफी बढ़ जाती है। खेत में हरी खाद बनाने से मिट्टी भुरभुरी होती है। इसके अलावा भूमि में हवा का संचार अच्छे से होता है। भूमि की जलधरण क्षमता, अम्लीयता और क्षारीयता में भी सुधार देखने

को मिलता है। हरे खाद के निर्माण से खेत में मृदा क्षरण में कम होता है। भूमि में हरे खाद के इस्तेमाल से मिट्टी में पाए जाने वाले उपयोगी सूक्ष्मजीवों की संख्या और उनकी क्रियाशीलता में वृद्धि हो जाती है। जिससे मिट्टी की उर्वरक क्षमता बढ़ जाती है। मृदा जनित रोगों रोगों में कमी देखने को मिलती है। जिससे किसान भाइयों का अपनी खेती के लिए रासायनिक उर्वरकों पर होने वाला खर्च भी कम हो जाएगा।

जमीन को होता फायदा

ढैंचा और सनई की खेती करने से जमीन को काफी ज्यादा फायदा होता है। इन सभी फसलों की जड़ों में ऐसी कई तरह की गांठे होती है जिनमें कई तरह के बैक्टीरिया होते हैं। यह वातावरण से नाइट्रोजन को खींचकर जमीन के अंदर बैठ जाते है। इन फसलों के पौधों को बाद में मिट्टी में मिलाकर दिया जाता है। इसके सहारे जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है।

हरी खाद के लाभ: इससे मिट्टी की संरचना में सुधार होता है। मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है। सूक्ष्म जीवाणुओं की गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है। फसल की जड़ों का फैलाव ठीक होता है। हरी खाद के गलने-सड़ने से कार्बन डाइआक्साइड गैस निकलती है, जोकि मुख्य फसल के पौधों को आसानी से बढ़ाती है। ढैंचा की फसल से अच्छी पैदावार प्राप्त होती है, जिससे उनके बीजों को बाजार में बेचने पर किसानों को अच्छी आय प्राप्त हो जाती है। यह फसल बहुत ही कम समय में तैयार हो जाती है। इस फसल से प्रति हेक्टेयर भूमि में 80 किलोग्राम नाइट्रोजन इकट्ठी हो जाती है। इस फसल को शुष्क व नम जलवायु तथा सभी प्रकार की भूमियों में उगा सकते हैं। ढैंचा की फसल से हमें हरी खाद प्राप्त होती है।

ढैंचा का उपयोग एवं महत्व: ढैंचा एक कम अवधि (45 दिन) की हरी खाद की फसल है। गर्मियों के दिनों में 5- 6 सिंचाई करके ढैंचा की फसल को तैयार कर लेते हैं तथा इसके बाद धान की फसल की रोपाई की जा सकती है।

ढैंचा की फसल से प्रति हेक्टेयर भूमि में 80 किलोग्राम नाइट्रोजन इकट्ठी हो जाती है। जुलाई या अगस्त में ढैंचा की फसल की बुआई कर, 45- 50 दिन बाद खेत में दबाकर, हरी खाद का काम इस फसल से ले सकते हैं। इसके बाद गेहूं या अन्य रबी की फसल को उगा सकते हैं।

ढैंचा की फसल को शुष्क व नम जलवायु व सभी प्रकार की भूमियों में उगा सकते हैं। जलमग्न वाली भूमियों में ही यह 1.5-1.8 मी. ऊंचाई तक बढवार कर लेता है। यह एक सप्ताह तक 60 सेंटीमीटर पानी में खड़ा रह सकता है। भूमि का पीएच मान 9.5 होने पर भी इसे उगा सकते हैं। अत: लवणीय व क्षारीय भूमियों के सुधार के लिए यह सर्वोत्तम है। भूमि का पीएच मान 10-5 तक होने पर लीचिंग अपनाकर या जिप्सन का प्रयोग करके इस फसल को उगा सकते हैं। इस फसल से 45 दिन की अवधि में लवणीय भूमियों में 200-250 क्विंटल जैविक पदार्थ भूमि में मिलाया जा सकता है।

किसानों के लिए वरदान मुर्गीपालन, कुछ सावधानियां जरूरी

डा. डॉक्टर मानसी शुक्ला
सहायक प्राध्यापक, पशु शरीर संरचना विभाग, पशु महाविद्यालय, रीवा, मप्र

भारत की करीब 80 प्रतिशत आबादी कृषि उत्पादन पर अपना जीवन निर्वाह करते है। हमारे देश की अर्थव्यवस्था में कृषि के साथ-साथ पशुपालन तथा मुर्गीपालन का बहुत महत्व है। आजकल बढती हुई जनसंख्या की समस्या के कारण हमारी भूमि पर अधिक दबाव पड़ रहा है, जिसके कारण यह संभव नहीं है कि अधिक भूमि पर अनाज आदि उगा सकें। एसी स्थिति में भोजन की समस्या को हल करने में मुर्गीपालन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। मुर्गीपालन से हम बढ़ती हुई बेरोजगारी की समस्या को भी कुछ हद तक हल कर सकते हैं।

मुर्गीपालन का भारतीय कृषकों के लिये विशेष महत्व है क्योंकि इस व्यवसाय में कम खर्चे की आवश्यकता होती है तथा आमदनी भी अच्छी व जल्दी होती है। मुर्गी से प्राप्त खाद कृषि के लिये वरदान है। घर की महिलाएँ एवं बच्चे भी इस कार्य को कर सकते हैं और घर की आमदनी बढ़ा सकते है। मुर्गीपालन से हम बढ़ती हुई बेरोजगारी की समस्या को भी कुछ हद तक हल कर सकते है। मुर्गीपालन द्वारा आमदनी के अतिरिक्त मनुष्य के भोजन में अण्डे व माँस द्वारा पोष्टिक तत्वों की पूर्ती होने के कारण इस व्यवसाय की अत्यंत उपयोगिता है।

कुक्कुट पालन में विकसित आनुवंशिक तकनीकों के प्रयोग तथा आधुनिक प्रबन्ध उपायों को अपनाने से भारतीय कुक्कुट उद्योग में 8 से 10 प्रतिशत अण्डा उत्पादन तथा ब्रायलर उत्पादन में 15 से 20 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही है। आज भारत में अण्डा उत्पादन 3700 करोड़ तथा ब्रायलर उत्पादन 90 करोड़ प्रतिवर्ष हो रहा है और विश्व में अण्डा उत्पादन में भारत चौथे तथा ब्रायलर उत्पादन में उन्नीसवें स्थान पर है।

ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले किसान संसाधनों की कमी, तकनिकी जानकारी के अभाव एवं अन्य कारणों से व्यवसायिक स्तर पर कुक्कुट पालन नहीं कर पाते है। व्यवसायिक स्तर पर कुक्कुट पालन करने के लिये अधिक धन, समुचित तकनिकी ज्ञान तथा संसाधनों की आवश्यकता होती है जो कि गरीब किसानों के लिये नामुमकिन है।

आज के समय में मुर्गी पालन हमारे देश में एक बड़े व्यवसाय के रूप में उभर गया है। यह कृषकों की जीविका का एक मुख्य साधन बन चुका है। मुर्गी पालन से हमारे देश के बेरोजगारी की समस्या से काफी हद तक निजात पाया जा सकता है। युवा इसे रोजगार बना सकते हैं। किंतु, यदि मुर्गी पालन को सही और उन्नत तरीके से किया जाता है तभी वह अधिक और अच्छी आय देता है। इसी कारण हमें लाभप्रद मुर्गी पालन हेतु कुछ तकनीकी बातों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। यदि हम निम्नलिखित महत्वपूर्ण तकनीकी बातों का ध्यान रखें और पालन करें तो हमें इस व्यवसाय से निश्चित ही लाभ प्राप्त होता है-

- मुर्गीपालन पहले छोटे रूप में शुरू करना चाहिए फिर बाद में उसे बड़े फॉर्म में विकसित करें। हमेशा सही और अच्छी कंपनी की दवा और टीका का प्रयोग करना चाहिए। हमेशा विश्वसनीय और प्रमाणित हैचरी से ही चूजों को लेने चाहिए। चूजों एवं मुर्गों अथवा मुर्गियों के लिए उचित दाने और पानी का इंतजाम करना चाहिए।
- प्रत्येक 100 चीजों के लिए कम से कम तीन पानी के और तीन दाने के बर्तन होना बहुत ही आवश्यक है।
- मैन्युअल बर्तन साफ करने में आसन होते हैं, लेकिन पानी देने में थोड़ी कठिनाई का अनुभव होता है। ऑटोमेटिक बर्तनों में पाइप वाले सिस्टम होने के कारण टंकी का पानी सीधे पानी के बर्तन में भर जाता है।
- बर्तन साफ करने के बाद एक बार पानी से अवश्य धुएं, इससे बर्तन कीटाणु मुक्त रहते हैं।
- ब्रायलर फार्म का पूरा व्यापार ब्रूडिंग पर निर्भर करता है, ब्रूडिंग में चूक होने पर चूजे 7 से 8 दिन में कमजोर होकर मर जाते हैं या सही दाना इस्तेमाल न करने पर भी उनका विकास ठीक से नहीं हो पता है।
- ब्रूडिंग में उचित तापमान की व्यवस्था करनी चाहिए।

बिजली के बल्ब से, गैस से या अंगीठी से ब्रूडिंग की जाती है, लेकिन अंगीठी से ब्रूडिंग करने में ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है क्योंकि, इससे शेड में धुआं भर सकता है और आज भी लग सकती है द्य गैस ब्रूडिंग सबसे अच्छा तरीका है।

चूजों को शुरू में 23 घंटे लाइट देना चाहिए और 1 घंटे के लिए लाइट बंद करने कर देना चाहिए, पहले दो सप्ताह रोशनी में कमी नहीं करनी चाहिए।

मुर्गियों में कई तरह की बीमारियां पाई जाती हैं जैसे हैजा, रानीखेत, परजीवी कृमि और टाइफाइड इत्यादि, जिसके कारण मुर्गी पलकों को हर साल काफी नुकसान उठाना पड़ सकता है। इन बीमारियों से बचाव के लिए समय-समय पर मुर्गियों को कृमिनाशक दवा और टीकाकरण कराना बहुत ही जरूरी है। ग्रीष्म ऋतु में ब्रायलर मुर्गी पालन में विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। मुर्गियों को तेज तापमान और अत्यधिक गर्मी से बचना चाहिए। मौसम के में बदलाव की वजह से मुर्गियों की मृत्यु हो सकती है। गर्मियों में पानी के बर्तनों की संख्या बढ़ा देनी चाहिए द्य शेड की खिड़कियों पर टाट का गिला कपड़ा कपड़ा लटका दें लेकिन यह ध्यान रखें की टाट खिड़कियों से ना चिपका। यदि मुर्गियों में किसी भी प्रकार की बीमारी के अथवा ऋतु में बदलाव के लक्षण दिखाई दे तो तुरंत उसे पशु चिकित्सा के यहां ले जाएं।

उपरोक्त बातों का ध्यान रखकर हम मुर्गीपालन से निश्चित ही अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं।

वन पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं फल खाने वाले पक्षी

एक नए शोध में उष्णकटिबंधीय जंगलों के प्राकृतिक पुनर्जनन में एक बड़ी रुकावट का पता चला है। ब्राजील के अटलांटिक जंगलों में एकत्रित जमीनी आंकड़े दिखाते हैं कि जब जंगली उष्णकटिबंधीय जंगलों में पक्षी स्वतंत्र रूप से घूमते हैं, तो वे पुनर्जीवित उष्णकटिबंधीय वनों के कार्बन भंडारण को 38 फीसदी तक बढ़ा सकते हैं।

फल खाने वाले पक्षी जैसे कि रेड-लेग्ड हनीक्रीपर, पाम टैनेजर, या रूफ्स-बेलिड थ्रश वन पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वे जंगलों में फलों को खाकर उनके बीजों को पूरे जंगल में फैलाते हैं।

उष्णकटिबंधीय जंगलों में 70 से 90 फीसदी पेड़ की प्रजातियां जानवरों द्वारा बीजों के फैलाने पर निभर्ज़ हैं। यह शुरुआती प्रक्रिया जंगलों को बढ़ने के लिए जरूरी है। जबकि पहले के अध्ययनों में कहा गया है कि पक्षी वन जैव विविधता के लिए महत्वपूर्ण हैं, शोधकर्ताओं को अब इस बात की समझ है कि वे जंगलों की बहाली में कैसे योगदान देते हैं।

नेचर क्लाइमेट चेंज नामक पत्रिका में प्रकाशित नए अध्ययन में पेड़ों के दोबारा उगने में जंगली पक्षियों के महत्वपूर्ण योगदान का प्रमाण मिलता है। शोधकर्ताओं ने कम घने जंगलों में कार्बन भंडारण क्षमता की तुलना बहुत कम घने जंगलों से की। आंकड़ों से पता चलता है कि कम घने जंगल पक्षियों की आवाजाही को सिमित करते हैं, जिससे कार्बन रिकवरी की संभावना 38 फीसदी तक कम हो जाती है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों के बीज फैलाव के मामले में अलग-अलग प्रभाव होता है। छोटे पक्षी अधिक बीज फैलाते हैं, लेकिन वे केवल कम कार्बन भंडारण क्षमता वाले पेड़ों से छोटे बीज ही फैला सकते हैं। इसके विपरीत, टोको टूकेन या कर्ल-क्रेस्टेड जे जैसे बड़े पक्षी भारी कार्बन भंडारण क्षमता वाले पेड़ों के बीज फैलाते हैं। समस्या यह है कि बड़े पक्षियों के अत्यधिक कमी वाले जंगलों में जाने की संभावना कम होती है।

अध्ययन के हवाले से शोधकर्ता ने कहा, यह महत्वपूर्ण जानकारी हमें जंगलों की सक्रिय बहाली प्रयासों, जैसे कि वृक्षारोपण को इस वन आवरण सीमा से नीचे वाले परिदृश्यों में शामिल करने में सक्षम बनाती है, जहां सहायता प्राप्त बहाली सबसे जरूरी और प्रभावी है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि फलों के पेड़ लगाने और अवैध शिकार को रोकने जैसी कई रणनीतियां उष्णकटिबंधीय इलाकों में जानवरों की आवाजाही को बढ़ा सकती हैं, जहां अपने आप बहाली की संभावना अधिक है। अत्यधिक खंडित जंगलों में सक्रिय बहाली आवश्यक है।

जमुनापारी बकरी

शारीरिक अभिलक्षणः आकार बड़ा, रंग सफेद व कभी-कभी गले व सिर पर लाल काले धब्बे भी पाये जाते हैं, उभरी नाक जो रोमन नोज भी कहते हैं। नर इन पर बालों के गुच्छे मिलते हैं। मादा में दाढ़ी पाई जाती है। पीठ पर लम्बे बालों का गुच्छा होता है। लम्बे कान। **मूल स्थानः** इटावा जिला (उत्तर प्रदेश)। **उत्पादनः** दुकाजी नस्ल पर दुग्ध उत्पादन हेतु। **औसत शारीरिक भारः** (अ) नर - 80 किग्रा. (ब) मादा- 60 किग्रा.। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमताः** 280 किग्रा. (274 दिनों में), वसा का प्रतिशतः 7.8 प्रतिशत।

चांगथंगी

शारीरिक अभिलक्षणः इसे पशमीना बकरी भी कहते है। मध्यम, आकार, रंग मुख्यतः सफेद तथा काले, भूरे व धूसर हो सकता है सींग अधवृताकार, लम्बा व बाहर की तरफनिकले रहते है। मूल स्थानः चांगथांग क्षेत्र (लद्दाख) व लाहूल व स्थिति घाटी (हिमाचल)। उपयोगिताः रेशे (पशमीना) व मांस उत्पादन। औसत शारीरिक भार - (अ) नर 20 किलो, (ब) मादा 20 किलो।

चेगू

शारीरिक अभिलक्षणः मध्यम आकार रंग, सामान्य तथा सफेदी लिए हुए भूरा, लाल होता सींग ऊपर की ओर उठे हुए घुमावदार होते है। **उपयोगिताः** रेशे (पश्मीना) व मांस उत्पादन हेतु। **मूल स्थानः** लाहूस्पीती घाटी (हिमाचल प्रदेश), उत्तरकोशी, चमोली एवं पियोरागढ़ जिले (उत्तराखण्ड)। **औसत शारीरिक भार** : (अ) नर 69 किलो, (ब) मादा 60 किलो। औसत दुग्ध उत्पादन क्षमताः 69 किलो ग्राम (1187 दिनों में)।

पशुपालकों के लिए लाभकारी साबित हो सकती हैं बकरी की प्रमुख नस्लें

भारत पशुपालक द्वारा पाले जानेवाले बकरियों के प्रमुख नस्ल एवं उनके विभिन्न लक्षण

मेहसाना

शारीरिक अभिलक्षणः मध्यम आकार रंग, काला तथा कान की जड़ो के पास सफेद धब्बे होते हैं। कान सफेद, पत्ती की तरह तथा नीचे की ओर गिरे रहते हैं। सींग हल्के मुड़े ऊपर या पीछे की ओर मुड़े। उपयोगिताः दुग्ध उत्पादन हेतु। मूल स्थानः मेहसाना, बनासकांठा, गांधीनगर, अहमदाबाद जिले (गुजरात)। औसत शारीरिक भार - (अ) नर 37 किलो, (ब) मादा 32 किलो।

बारबरी

शारीरिक अभिलक्षणः मध्यम आकार व भूरे, सफेद रंग के धब्बे रंग लिए होती है कान छोटे, नुकीले तथा ऊपर उठे होते है सींग मध्यम तथा आगे या पीछे की ओर मुड़े हुए होती हैं। उत्पादनः दुकाजी नस्ल - मांस व दुग्ध उत्पादन हेतु। मूल स्थानः एटा, अलीगढ़, मथुरा जिले (उत्तर प्रदेश)। औसत दुग्ध उत्पादन क्षमताः125 किलो ग्राम (227 दिनों में)।

डा. अखिलेश पाण्डेय
डा. योगिता पाण्डेय
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय महू, नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा एवं पशुपालन विश्वविद्यालय

खेती-किसानी के साथ पशुपालन करके किसान अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। छोटे किसानों के लिए बकरी पालन मुनाफे का सौदा साबित हो सकता है। बकरी पालन मुख्य रूप से दूध व मांस के लिए किया जाता है। देश में अलग-अलग राज्यों में बकरी की अलग-अलग नस्लों का पालन किया जाता है। संसार में बकरियों की कुल 102 प्रजातियाँ उपलब्ध हैं। जिसमें से 20 भारतवर्ष में है। जहां एक ओर पशुओं के दाने चारे और दवाइयां मंहगी होने से पशुपालन आर्थिक दृष्टि से कम लाभकारी हो रहा है। वहीं बकरी पालन कम लागत, साधारण आवास, सामान्य रख-रखाव में गरीब किसानों और खेतिहर मजदूरों की जीवकोपार्जन का एक साधन बन रहा है। भारत में पाई जाने वाली बकरियों की प्रमुख नश्लें है, जिनका पालन कर किसान अच्छा लाभ कमा सकते हैं।

ब्लैक बंगाल

शारीरिक अभिलक्षणः कद छोटा, रंग काला व हल्का लाल भी हो सकता है। नर व मादा में दाढ़ी होती है। कान छोटे और आगे से सामने की ओर झुके या सीधे होते हैं। **उत्पादनः** मांस उत्पादन। **मूल स्थानः** नादीया जिला (बंगाल), असम, मणिपुर, त्रिपुरा अरुणाचल प्रदेश व मेघालय। **औसत शारीरिक भारः**(अ) नर 15 किग्रा. (ब) मादा 12 किग्रा.।

गजंना

शारीरिक अभिलक्षणः मध्यम कद, रंग काला, सफेद, भूरा व धब्बेदार होता है। कान मध्यम आकार के तथा सींग लम्बे व ऊपर की ओर होते हैं। **उत्पादनः** मांस उत्पादन हेतु। **मूल स्थानः** पश्चिम गंजाम, कोरापुत जिले (उड़ीसा)। **दुग्ध उत्पादनः** 50 ली./120 दिन।

संगमनेरी

शारीरिक अभिलक्षणः मध्यम आकार, रंग काला, सफेद व भूरा। कान मध्यम व नीचे की ओर गिरे। सींग ऊपर व पीछे की ओर झुके। **उत्पादनः** मोहेर व मांस उत्पादन हेतु। **मूल स्थानः** पुणे व अहमदनगर जिले (महाराष्ट्र)। **दुग्ध उत्पादन क्षमताः** 83 किलो/157 दिन। औसत शारीरिक भारः (अ) नर 38 किग्रा. (ब) मादा 29 किग्रा.।

सानेन

शारीरिक अभिलक्षणः सफेद व हल्का क्रीम रंग, कान ऊपर की तरफ मुड़े। शीत वातावरण में अच्छे परिणाम देती है। इसे बकरी की जर्सी नस्ल भी कहते हैं। क्योंकि इसके दूध में वसा बहुत ज्यादा होता है। **मूल स्थानः** सानेन घाटी (स्विटजरलैंण्ड)। **उत्पादनः** दुग्ध उत्पादन हेतु। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमताः** 1000 किलो/270 दिन। **औसत शारीरिक भारः** नर - 80 किग्रा., मादा- 64 किग्रा.। वसाः 3-4 प्रतिशत।

टोगनबर्ग

शारीरिक अभिलक्षणः मध्यम आकार, सींग रहित नस्ल। रंग भूरा व पैरों में सफेद। **मूल स्थानः** टोगनबर्ग घाटी (स्विटजरलैंण्ड)। **उत्पादनः** दुग्ध उत्पादन हेतु। **दुग्ध उत्पादन क्षमताः** 800-1000 किलो/150-200 दिन। **शारीरिक भारः** (अ) नर - 65-90 किग्रा. (ब) मादा- 50-85 किग्रा.।

बारबरी

शारीरिक अभिलक्षणः मध्यम आकार व भूरे सफेद रंग के धब्बे, कान छोटे, नुकीले तथा ऊपर उठे। सींग मध्यम तथा आगे या पीछे की ओर मुड़े। **उत्पादनः** दुकाजी नस्ल - मांस व दुग्ध उत्पादन हेतु। **मूल स्थानः** एटा, अलीगढ़, मथुरा जिले (उत्तर प्रदेश)। दुग्ध उत्पादन क्षमताः125 किग्रा. (227 दिनों में)।

न्युबियन

शारीरिक अभिलक्षणः रंग काला, गहरा भूरा, ऑखों व नथुनों के बीच सिर का हिस्सा उभार लिए हुए होता है। **उत्पादनः** दुग्ध, मांस व चमड़ा उत्पादन हेतु। **मूल स्थानः** सुडान। शारीरिक भारः (अ) नर- 80 किग्रा. (ब) मादा- 64 किग्रा। दुग्ध उत्पादन क्षमता - 800 ली./250 दिन।

अंगोरा

शारीरिक अभिलक्षणः भूरा, धूसर काला भी हो सकता है। लाल रंग के शेड्स लिए होता है। नर-मादा दोनों सींग वाले। नर के सींग ज्यादातर घुमावदार होते हैं। **उपयोगिताः** मोहेर व मांस उत्पादन हेतु। **मूल स्थानः** अंगोरा (एशिया)। शारीरिक भारः (अ) नर - 60-80 (ब) मादा - 40-50 किग्रा। **मोहेरा उत्पादनः** (अ) नर 3.5 किलो/वर्ष (ब) मादा 5 किलो/वर्ष।

सिरोही

शारीरिक अभिलक्षणः गठीला आकार, मध्यम ऊंचाई, भूरा रंग व कभी-कभी इस पर हल्के व गहरे रंग के भूरे धब्बे भी पाए जाते हैं। इस नस्ल में गले के नीचे कलगी (मांसल भाग) होता है जो इस नस्ल की विषेशता है कान पत्ती की तरह चपटे तथा नीचे की ओर झुकी रहती हैं सींग छोटे व घुमावदार व ऊपर की ओर मुड़े हुए होते हैं। **उत्पादनः** दुकाजी नस्ल, दुग्ध व मांस उत्पादन हेतु। **मूल स्थानः** सिरोही जिला अजमेर, अरावली, क्षेत्र राजस्थान। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमताः** 71 किग्रा. (175 दिनों में)।

अल्पाईन

शारीरिक अभिलक्षणः रंग काला या सफेद होता है। कान नुकीले व छोटे। **मूल स्थानः** फ्रांस। **उत्पादनः** दुग्ध उत्पादन। **औसत दुग्ध उत्पादनः** 308.4 किलो/245 दिन। **औसत भारः** (अ) नर - 80 किलो ग्राम (ब) मादा- 60 किग्रा.।

बीटल

शारीरिक अभिलक्षणः शरीर का रंग काला बीटल या सफेद धब्बेदार होता है। कान लंबे व नीचे की ओर लटके हुए होते है नर में दाढी होती है। **उपयोगिताः** दुकाजी नस्ल मांस व दुग्ध उत्पादन हेतु। **मूल स्थानः** अमृतसर, गुरदासपुर, फिरोजपुर जिले (पंजाब)। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमताः** 173 किलो ग्राम (182 दिनों में)। औसत शारीरिक भारः (अ) नर 70 किलो, (ब) मादा 46 किलो।

देश के 10 राज्यों में सबसे अधिक डिमांड

फायदे का सौदा...एक साथ तीन-चार बच्चे देती है 'अविशान'

भोपाल। जागत गांव हमार

देश के ग्रामीण क्षेत्रों में खेती-किसानी के बाद पशुपालन सबसे अच्छा व्यवसाय माना जाता है। कमाई के लिहाज से भी पशुपालन अब किसानों के लिए फायदे का सौदा बनता जा रहा है। पशुपालक इसमें गाय, भैंस के साथ भेड़, बकरी का भी पालन कर रहे हैं। लेकिन कई बार पशुपालक कंफ्यूज रहते हैं कि वो किस जानवर का पालन करके कम लागत में अधिक मुनाफा कमाएं। ऐसे में अगर आप भी पशुपालन करना चाहते हैं तो आप भेड़ पालन कर सकते हैं क्योंकि भेड़ की ऐसी कई नस्ले हैं जिन्हें पालकर पशुपालकों को फायदा मिल सकता है। भेड़ की ऐसी ही एक नस्ल है जो एक साथ तीन-चार बच्चे देती है। इस भेड़ की 10 राज्यों में सबसे अधिक डिमांड है। इसमें हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, झारखंड और हिमाचल प्रदेश शामिल हैं। ऐसे में अगर आप पशुपालन करना चाहते हैं तो अविशान नस्ल की भेड़ पालकर अधिक लाभ कमा सकते हैं।

भेड़ के नस्ल की खासियत- बात करें भेड़ के नस्ल की तो इसका नाम अविशान है। इस भेड़ का पालन भारत के राजस्थान, पंजाब और अब हिमाचल प्रदेश में शुरू हो गया है। अविशान नाम की ये भेड़ साल 2016 में ही 16 साल के शोध के बाद तैयार की गई है। अविशान नस्ल की यह भेड़ उच्च दर्जे की लंबे पैरों वाली बड़ी आकार की होती है। इसका चेहरा हल्का गहरे भूरे रंग का होता है और गर्दन तक फैला होता है। इसकी ऊन सफेद रंग की होती है और पूंछ पतली और मध्यम आकार की होती है। वहीं, यह भेड़ नर और मादा दोनों किस्म में बिना सींग के होती है।

3 से 4 बच्चों को देती है जन्म

इस प्रजाति की भेड़ एक साथ 3-4 बच्चों को जन्म देती है और एक साल में दो बार बच्चे देती है। ऐसे में पशुपालकों को इस नस्ल से एक साल में 6 से 8 बच्चे मिल सकते हैं जिसके चलते कम इन्वेस्टमेंट में किसानों को अधिक लाभ होगा। वहीं विशेषज्ञों की मानें तो इस भेड़ से पैदा हुए बच्चों की वृद्धि दर दूसरे भेड़ की तुलना में 30 प्रतिशत अधिक है।

ऊन, मांस और दूध भी ज्यादा

अविशान भेड़ की एक साथ 3 से 4 बच्चे पैदा करने के साथ दूसरी खासियत यह भी है कि इससे 40 प्रतिशत अधिक ऊन और मांस मिलता है, जबकि यह दूसरी भेंड से 200 ग्राम अधिक दूध देती है। ऐसे में अविशान के पालन से किसान और पशुपालकों की 2 से 3 गुणा अधिक आय होगी। विशेषज्ञों की मानें तो इस किस्म की भेड़ से होने वाले बच्चे यानी मेमने जन्म के समय 3 किलो 30 ग्राम के होते हैं, जबकि 3 महीने में 16 किलो, 6 महीने में 25 किलो और एक साल में 34 किलो के हो जाते हैं। इसका सीधा फायदा पशुपालकों को उन्हें बेचकर मिलता है। इसके अलावा इस नस्ल की ऊन बेहतर क्वालिटी की होती है, इससे भी पशुपालकों को फायदा होता है।

मेहसाना भैंस

शारीरिक अभिलक्षण : मध्यम आकार के पशु, रंग सामान्यत : काला पर कुछ पशु भूरे रंग के भी हो सकते सींग हसिंयाकार ऑखे काली व चमकदार। मूल स्थान : मेहसाना, गांधीनगर, अहमदाबाद (गुजरात) उपयोगिता : दुग्ध उत्पादन औसत शारीरिक भार : (अ) नर 565 किलोग्राम (ब) मादा- 484 किलोग्राम प्रथम ब्यांत की आय :1266 दिन औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता :1940 किलोग्राम वसा का प्रतिशत : 7 प्रतिशत प्राप्ति हेतु शासकीय प्रजनन प्रक्षेत्र : भैंस प्रजनन केन्द्र, राष्ट्रीय डेरी विकास परिशद (आंध्रप्रदेश) पशुधन अनुसंधान केन्द्र गुजरात कृषि विवि,गुजरात।

पशुपालकों के लिए लाभकारी साबित हो सकती हैं भैंस की प्रमुख नस्लें

भारत में पायी जाने वाली भैंस की प्रमुख नस्ल एवं उनके विभिन्न लक्षण

डा. अखिलेश पाण्डेय
डा. योगिता पाण्डेय
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय मह्, नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा एवं पशुपालन विश्वविद्यालय

हमारे देश में खेती के साथ-साथ पशुपालन की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। यहां किसान खेती के साथ पशुपालन करके अपनी आमदनी बढ़ा रहे हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए पशुपालन के लिए नई-नई नस्लों की भैंस के पालन पर जोर दिया जा रहा है। गाय व भैंस की कई ऐसी किस्में हैं, जो पशुपालकों के लिए काफी लाभकारी साबित हो रही हैं। भैंस के दूध में वसा की मात्रा भी ज्यादा होती है। भैंस की कई ऐसी उन्नत नस्लें हैं, जिनसे काफी अच्छा दुग्धोत्पादन प्राप्त करके बेहतर मुनाफा कमाया जा सकता है। जानिए भारत में पाई जाने वाली भैंस की प्रमुख नश्लों उनके लक्षण और विशेषताएं।

जफरावादी

शारीरिक अभिलक्षण: सामान्यत: काला रंग परन्तु कुछ पशुओं का रंग धूसर या माथे पर सफेद चक्के लिए हो सकता है सींग बडे व वृत्ताकार होते हैं, जो इस नस्ल की विशेषता है। **उपयोगिता:** दुग्ध उत्पादन, कृषि कार्य व यातायात हेतु (मालवाहक)। **मूल स्थान:** नागपुर व अकोला। **औसत शारीरिक भार:** (अ) नर 800 कि. (ब) मादा- 1000 कि.। **प्रथम ब्यांत की आय:** 1362 दिन औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता: 2150-2238 किलोग्राम। **वसा का प्रतिशत:** 68-7 प्रतिशत। **प्राप्ति हेतु शासकीय प्रजनन प्रक्षेत्र:** गौपशु प्रजनन प्रक्षेत्र जूनागढ़ (गुजरात)।

नागपुरी

शारीरिक अभिलक्षण: पशुओं का रंग काला होता है पर चेहरे, टाँगो व पूँछ के सिरो पर सफेद चकत्ते होते है, सींग चपटे घूमावदार व गर्दन से कंधों की ओर फैले होते हैं। **मूल स्थान:** महाराष्ट्र के नागपुर व अकोला जिले। **उपयोगिता:** दुग्ध उत्पादन व कृषि कार्य हेतु उपयुक्त। **औसत शारीरिक भार:** (अ) नर 349 किलोग्राम (ब) मादा- 396 किलोग्राम। **प्रथम ब्यांत की आय:** 1672 दिन। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता:** 780-1520 किलोग्राम। **वसा का प्रतिशत** - 7-8.25 प्रतिशत।

भदावरी

शारीरिक अभिलक्षण: मध्यम आकार की आकृति वाला शरीर, सींग नीचे की ओर निकलकर पीछे की ओर गर्दन के पास जाकर अन्त में ऊपर की ओर मुड जाते हैं। इन पशुओं का रंग हल्के ताम्र से लेकर गहरे ताम्र तक होता है। **उपयोगिता:** दुग्ध उत्पादन हेतु। **मूल स्थान:** आगरा व इटावा जिले (उ.प्र.), मुरैना, व भिण्ड जिले (म.प्र.)। **औसत शारीरिक भार:** (अ) नर 475 किग्रा. (ब) मादा- 425 किग्रा.। **प्रथम ब्यांत की आय** - 1,477 दिन। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता:** 780 किग्रा.। **वसा का प्रतिशत:** 8.6 प्रतिशत। **प्राप्ति हेतु शासकीय प्रजनन प्रक्षेत्र:** भदावरी फार्म कृषि कॉलेज ग्वालियर (म.प्र.), भदावरी प्रजनन प्रक्षेत्र इटावा, उप्र।

टोडा भैंस

शारीरिक अभिलक्षण: रंग राख की तरह धूसर, सींग लंबे व विभिन्न आकार लिए होते हैं सींग आकार पर मोटे व अंत मे सकरे होते हैं। **उपयोगिता:** दुग्ध, कृषि कार्य व सामाजिक-सार्स्कृतिक व धार्मिक आयोजन। **मूल स्थान:** तमिलनाडू में नीलगिरी की पहाड़िया। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता:** 380 किलोग्राम **प्रथम ब्यांत की आय:** 1400 दिन। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता:** 1200 किग्रा.। **वसा का प्रतिशत:** 8.2 प्रतिशत।

नीली रावी भैंस

शारीरिक अभिलक्षण: माथे पर काले, चेहरे, नखुनो टांगो व पूँछ पर सफेद रंग के निषान होते हैं। सींगे छोटी व मुड़ी होती है। **उपयोगिता:** दुग्ध उत्पादन हेतु। **मूल स्थान:** सतलज व रावी नदी के किनारो, अमृतसर व फिरोजपुर जिले। **औसत शारीरिक भार:** नर 454 कि.ग्रा., मादा- 567 कि.ग्रा.। **प्रथम ब्यांत की आय:**1359 दिन। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता:** 1586-1850 कि.ग्रा. **वसा का प्रतिशत:** - 5.1-6.8 प्रतिशत। **प्राप्ति हेतु शासकीय प्रजनन प्रक्षेत्र:** भैंस प्रजनन प्रक्षेत्र लुधियाना (पंजाब)।

मुर्रा भैंस

शारीरिक अभिलक्षण: पशुओं का आकार स्थूल, सींग छोटे व सर्किल रूप में मुड़े हुए एवं रंग गहरा होता है। **मूल स्थान:** रोहतक, जिन्द, हिसार, गुडगाँव (हरियाणा) एवं दिल्ली क्षेत्र। **उपयोगिता:** दुग्ध उत्पादन हेतु। **औसत शारीरिक भार:** (अ) नर 567 किग्रा. (ब) मादा- 516 किग्रा.। **प्रथम ब्यांत की आय:** 1,319 दिन। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता:** 1679 किग्रा.। **वसा का प्रतिशत:** 7.3 प्रतिशत। **प्राप्ति हेतु शासकीय प्रजनन प्रक्षेत्र:** राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान करनाल, केन्द्रिय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार हरियाणा ।

सुरती भैंस

शारीरिक अभिलक्षण: पशुओं का रंग भूरे से लेकर धूसर। त्वचा का रंग काला व भूरा। सींग चपटे, हसिंयाकार व नीचे और पीछे जाते हुए व अंत में ऊपर की ओर जाकर एक हुक का आकार में। **उपयोगिता:** दुग्ध उत्पादन हेतु। **मूल स्थान:** भरूच, खेड़ा व सूरत जिले (गुजरात)। **औसत शारीरिक भार:** (अ) नर 380 कि.ग्रा (ब) मादा- 500 कि.ग्रा.। **औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता:** 380 कि.ग्रा। **प्रथम ब्यांत की आय:** 2203 दिन। **दुग्ध उत्पादन:** 1208 किग्रा.।

मधुमक्खी के परपरागण से आम की गुणवत्ता एवं उत्पादन में वृद्धि

रीवा। जागत गांव हमार

कृषि महाविद्यालय रीवा म प्र के अधिष्ठाता डा एस के त्रिपाठी के मागज़्दशज़्न में अखिल भारतीय समन्वित फ्ल अनुसंधान परियोजना आईसीएआर बेंगलूरू के अंतगज़्त फ्ल अनुसंधान केंद्र रीवा में आम और अमरूद में अनुसंधान कायज़् चल रहा है द्य इस समय आम के बगीचे में केंद्र के वैज्ञानिकों डॉ टी के सिंह एवं डॉ अखिलेश कुमार द्वारा भ्रमण एवं निरीक्षण किया गया द्य पौध सरंक्षण वैज्ञानिक डॉ कुमार के देख रेख में केंद्र पर पिछले तीन वषोज़् से मधुमक्खी बॉक्स गौर (फूल की अवस्था) के समय रखा जा रहा है जिससे देखा जा रहा है कि 15 प्रतिशत तक आम का उत्पादन साथ ही साथ आम की गुणवत्ता में वृद्धि हो रही है द्य परियोजना के इनचाजज़् डॉ टी के सिंह ने बताया कि यहां पर आम की 237 प्रजातियां अनुसंधान कायज़् के लिए उपलब्ध है जिसमें प्रमुख रूप से जी आई टैग से प्रमाणित सुन्दरजा, लंगड़ा, दशहरी, आम्रपाली, चौंसा, इरवीन, मल्लिका, बॉम्बे ग्रीन, तोतापरी, कृष्ण भोग, नीलम फज़्ली इत्यादि हैं द्य डा़ सिंह ने बताया कि इस समय आम में फ्ल लग चुके है जिसमें सिंचाई के साथ पोषक तत्व, कीट एवं रोग प्रबंधन करना आवश्यक है जिससे आम के उत्पादन में वृद्धि होगी और किसानों की आय भी बढ़ेगी द्य

किसान
जल निकासी की भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए

वैज्ञानिक तरीके से करें पपीते की खेती तो एक बीघा में 5 लाख तक की होगी कमाई

भोपाल। जागत गांव हमार

भारत, ब्राजील, इंडोनेशिया, नाइजीरिया और मैक्सिको पपीता उत्पादन में सबसे बड़े उत्पादक राष्ट्र हैं। पपीता जल्द तैयार होने वाली फसल है। इसका फायदा यह है कि एक बार लगाने में दो बार फल लगते हैं। अगर खेत में पपीता लगा है, तब भी उसमें फसल बोई जा सकती है। अगर वैज्ञानिक तरीके से पपीते की खेती की जाए तो एक बीघा में पांच लाख रुपए तक की कमाई हो सकती है। कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि भारत में प्रमुखता से उगाई जाने वाली किस्में रेड लेडी उभय लिंगी किस्म होती। कुछ किसान सोलो टाइप पपीते की खेती भी कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि पपीता उगाने के लिए आदर्श तापमान 21 डिग्री सेंटीग्रेड से लेकर 36 डिग्री सेंटीग्रेड सर्वोत्तम होता है। कम तापमान पर इसकी पत्तियों को नुकसान हो सकता है और पौधे मर भी सकते हैं।

कैसे हो मिट्टी- वैज्ञानिक रामपाल ने बताया कि पपीते की खेती के लिए मिट्टी का पीएच लेवल 6.0 और 7.0 के बीच सबसे अच्छा होता है। जल निकासी की भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। अगर पपीते के खेत में 24 घंटे से अधिक समय तक पानी रुक जाता है तो पौधे मर जाता है, उसे बचाना बेहद मुश्किल हो जाता है। इसलिए पपीता की खेती के लिए किसानों को ऊंची जमीन का चयन करना चाहिए, जहां बारिश का पानी न भरे।

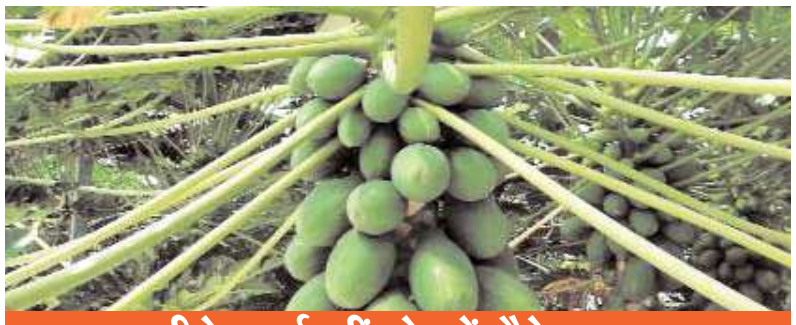

सीधे बुवाई नहीं, खेत में पौधे लगाए

पपीते की खेती के लिए खेत में ऊंचे मेड़ का निर्माण करना चाहिए। पपीते की खेती करने के लिए पौधे किसी ऊंची क्यारी या गमले या पॉलीथिन बैग में तैयार कर लेने चाहिए। जहां पौध तैयार करें, वहां बीज की बुवाई से पहले क्यारी को 10 फीसदी फार्मेल्डिहाइड के घोल का छिड़काव करके उपचारित करना चाहिए। इसके बाद बीज एक सेमी गहरे और 10 सेमी की दूरी पर बोना चाहिए।

निराई-गुड़ाई और सिंचाई भी जरूरी

गर्मियों में पपीते की फसल की हर छह से सात दिन में सिंचाई करनी होती है। सिंचाई का पानी पौधे के सीधे संपर्क में नहीं आना चाहिए। लगातार सिंचाई करते रहने से खेत की मिट्टी कड़ी हो जाती है, जिससे पौधों की वृद्धि रुक जाती है। इसलिए जरूरी है कि हर दो-तीन सिंचाई के बाद खेत की हल्की निराई-गुड़ाई की जानी चाहिए। इससे मिट्टी में हवा और पानी का अच्छा संचार बना रहता है।

बीमारियों की रोकथाम

खड़ी पपीते की फसल में विभिन्न विषाणुजनित बीमारियों की रोकथाम के लिए दो प्रतिशत नीम का तेल, जिसमें 0.5 मिली प्रति लीटर स्टीकर मिलाकर एक-एक महीने के अंतर पर छिड़काव आठवें महीने तक करना चाहिए। उच्च क्वालिटी के फल एवं पपीता के पौधों में रोगरोधी गुण पैदा करने के लिए आवश्यक है कि चार ग्राम यूरिया, चार ग्राम जिंक सल्फेट, 04 ग्राम बोरान, 04 ग्राम लीटर पानी में घोलकर एक-एक महीने के अंतर पर छिड़काव पहले महीने से आठवें महीने तक करना चाहिए।

ज्यादा धूप और ठंड से भी नुकसान

पपीता के पौधे को गर्मी के मौसम में आपको ज्यादा गर्मी से बचाना होता है। गर्मी और धूप बहुत तेज पड़ रही हो तो ऐसे में आप बाग में जालीदार जाल लगा सकते है।. जिससे धूप का प्रकोप कम हो। या फिर आप किसी और चीज से पौधों पर छाया कर सकते हैं। और जब तापमान बेहद कम हो जाता है। तो ऐसे में भी आपको पौधों की देखभाल करनी होती है। सर्दियों के मौसम में पाले से बचने के लिए आप प्लास्टिक या किसी और चीज का इस्तेमाल कर सकते हैं।

जायद में उगाएं मक्का की फसल, किसानों को होगा बंपर मुनाफा

जायद में उगाएं मक्का की फसल, किसानों को होगा बंपर मुनाफा

मक्का को दुनिया में खाद्यान्न फसलों की रानी कहा जाता है, क्योंकि इसकी उत्पादन क्षमता खाद्यान्न फसलों में सबसे ज्यादा है। मक्का को खाने के साथ कुक्कुट आहार, पशु आहार, शराब और स्टार्च के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। भारत में इससे 1000 से ज्यादा उत्पाद तैयार किए जाते हैं। इसलिए मक्के की खेती अन्य फसलों की तुलना में ज्यादा फायदेमंद है। मक्के की खेती जायद में भी की जाती है। जायद में मक्का की खेती भुट्टो और चारे दोनों के लिए की जाती है।

भोपाल। जागत गांव हमार

मक्का की खेती के लिए पर्याप्त जीवांश वाली दोमट मिट्टी अच्छी होती है। भली-भांति समतल और अच्छी जल धारण शक्ति वाली भूमि मक्का की खेती के लिए बेहतर होती है। पलेवा करने के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से 10-12 सेमी. गहरी एक जुताई तथा उसके बाद कल्टीवेटर या देशी हल से दो-तीन जुताइयां करके पाटा लगाकर खेत की तैयारी कर लेनी चाहिए।

कब करें बोवनी- जिस क्षेत्र में कम बारिश होती है, वहां के किसानों के लिए यह वरदान से कम नहीं है। क्योंकि किसान ज्यादा पानी की जरूरत वाली फसलें नहीं लगा पाते हैं। वहां धान की रोपाई और कटाई देर से होती है। इस कारण रबी मौसम में गेहूं लगाने में देर होता है और उत्पादन कम मिलता है। मक्के की खेती कर जलवायु परिवर्तन के दौर में फसल चक्र सुधारने में मदद मिलेगी और किसानों को अधिक मुनाफा मिलेगा। मक्का की बुवाई के लिए साल में कभी भी खरीफ, रबी और जायद मौसम कर सकते हैं। खरीफ में बुवाई का समय मध्य जून से मध्य जुलाई है। पहाड़ी और कम तापमान वाले क्षेत्रों में मई के अंत से जून के शुरुआत में मक्का की बुवाई की जा सकती है।

बीज और बोबनी का तरीका

20-25 किग्रा. संकुल और 18-20 किग्रा. संकर बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। बीज को 2.5 ग्राम थीरम या 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम रसायन से प्रति किलो बीज को शोधित करके बोएं। मक्का की बोवनी हल के पीछे उठे हुए बेड पर लाइनों में करें। संकर व संकुल प्रजातियों की बुवाई 60 सेमी. की दूरी पर करनी चाहिए। पौधे से पौधे की दूरी 20-25 सेमी. रखनी चाहिए। मीठी मक्का की बोवनी अन्य प्रजातियों से लगभग 400 मीटर की दूरी पर करना चाहिए।

खेती में मुनाफा ज्यादा

मक्का को पीला सोना भी कहा जाता है। एक हेक्टेयर में मक्का की खेती से किसानों को 1.50 लाख रुपए से ज्यादा का नेट मुनाफा मिल सकता है। जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के तहत मक्के की बोवनी की जरूरी है।

खराब मौसम के बावजूद फसल उगाने की सुविधा

किसानों के लिए फायदेमंद है टनल फार्मिंग, कम लागत, अच्छी कमाई और नुकसान का खतरा कम

टनल फार्मिंग मौसम में आए अचानक परिवर्तन से पौधे को सुरक्षित रखता है।

सर्दियों के मौसम के लिए बेहतरीन।

भोपाल। जागत गांव हमार

देश में इस समय खेती में कई नवाचार किए जा रहे हैं। इस नवाचार से किसानों को अच्छा मुनाफा भी हो रहा है। ऐसे में टनल फार्मिंग तकनीक कृषि के क्षेत्र में क्रांति से कम नहीं है। इस तकनीक से सब्जियों और फलों की खेती करके किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही यह पर्यावरण के लिए भी अच्छा माना जाता है। टनल फार्मिंग कई तरह के फल, सब्जियों और फूलों के उत्पादन के लिए उपयुक्त होता है। टनल फार्मिंग मौसम में आए अचानक परिवर्तन से पौधे को सुरक्षित रखता है।

खराब मौसम के बावजूद फसल उगाने की सुविधा- इस कृषि तकनीक का उपयोग सब्जियों, फलों, फूलों और जड़ी-बूटियों सहित विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने के लिए किया जाता है। यह किसानों को खराब मौसम के बावजूद फसल उगाने की सुविधा प्रदान करता है। टनल फार्मिंग एक कृषि प्रणाली है, जिसमें पौधों को सुरक्षित और नियंत्रित आवास में उगाया जाता है। इसमें प्राकृतिक उपायों का प्रयोग किया जाता है। टनल फार्मिंग को आमतौर पर सर्दियों के मौसम के लिए बेहतरीन माना जाता है। बता दें कि किसी भी पौधे की ग्रोथ के लिए कम से कम 10 डिग्री तापमान चाहिए होता है और सर्दियों में तापमान कम रहता है। हालांकि इस तकनीक के जरिए पौधों को उचित तापमान दिया जा सकता है, जिससे पौधे की ग्रोथ अच्छी होती है।

टनल फार्मिंग कैसे करता है काम

टनल फार्मिंग ऐसी संरचना है जिसमें खेत में एक मीटर चौड़ी क्यारियां तैयार की जाती हैं और इसके ऊपर अर्ध चन्द्राकार संरचना बांस या पाइप को मोड़कर बनाई जाती हैं। इन तैयार क्यारियों पर अर्द्धचन्द्राकार (आधा गोलाकार) की संरचना को लोहे के तारों द्वारा जोड़कर 1.5 से 2.0 मीटर के अंतराल पर जमीन में गड़ाकर लगाते हैं। फिर इसके ऊपर पारदर्शी प्लास्टिक-फिल्म (पन्नी) को ओढ़ा दिया जाता है। अर्द्धचन्द्रकार संरचनाओं पर फिल्म चढ़ाकर उनके निचले हिस्सों (किनारों) को मिट्टी में दबाते जाते हैं। इससे दिन के समय धूप निकलने पर अंदर का तापमान बढ़ जाता है, जो पौधे की ग्रोथ के लिए अच्छा होता है। ये बरसात, कीटों के संक्रमण और बीमारियों के जोखिम को काफी हद तक कम करता है। इस तरह की खेती में दिन के समय जब सूर्य की रोशनी प्लास्टिक पर पड़ती है तो टनल के अंदर का तापमान करीब 10 से 12 डिग्री तक बढ़ जाता है। इस वजह से इस तकनीक में सब्जियों को सर्दियों में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

केवीके के मार्गदर्शन में सफल हुई नर्मदापुरम में शिमला मिर्च की खेती

नर्मदापुरम। जागत गांव हमार

भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र गोविंद नगर के उद्यानिकी वैज्ञानिक लवेश कुमार चौरसिया ने नर्मदापुरम जिले में 2020-21 एवं 2021 -22 में शिमला मिर्च फसल का प्रक्षेत्र परीक्षण के तहत प्रदर्शन किसानों के खेत पर करवाया। उन्होंने किसानों को समन्वित कीट प्रबंधन के साधनों के प्रयोग करवाया। जिसके परिणामस्वरूप किसानों को कम लागत में अधिक आय प्राप्त होने लगी।

कृषि विज्ञान केंद्र के प्रयास से जिले में 21 हेक्टेयर में हो रही फसल- इस वर्ष कृषि विज्ञान केंद्र ने अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के तहत 10 किसानों के यहां शिमला मिर्च की फसल लगवाया है। नर्मदापुरम विकास खंड के पाहनवर्री ग्राम में जगदीश कुशवाहा जो कृष भूमि एपफपीओ के सदस्य हैं, उनके यहां शिमला मिर्च को लगवाया गया है। इस फसल की लागत 2680 रुपए आई है उन्होंने इसको सेंट्रल केंद्रीय प्रूफ संस्थान बैतूल रोड ईटारसी एवं आर्डनेंस फैक्ट्री परिसर में 60 से 80 रुपये में कुल 159 किग्रा शिमला मिर्च विक्रय कर 11,440 रुपए आय प्राप्त की है। उन्हें इसमें 8,760 का शुद्ध लाभ हुआ है।

सिवनी मालवा विकासखंड के कई किसान ले रहे अच्छा उत्पादन

बनखेडी विकास खंड के तिंदवाडा ग्राम के बालकिशन कुशवाहा, भगवान कुशवाहा, यशवंत कुशवाहा, बाबूलाल कुशवाहा, जुन्हेटा के गोविंद पटेल, डूमर के अखिलेश कुशवाहा बिछुआ के जगदीश कुशवाहा भी शिमला मिर्च का उत्पादन प्रदर्शन के तहत कर रहे हैं। तिंदवाडा के प्रगतिशील किसान गोपाल कुशवाहा भी अपने खर्च पर बीज लाकर शिमला मिर्च का अच्छा उत्पादन ले रहे हैं। इसी तरह पिपरिया विकासखंड के परसवाडा डांडिया के सवींद्र राजपूत एवं सिमारा के सुखराम कुशवाहा भी शिमला मिर्च लगाकर अच्छी आय प्राप्त कर रहे हैं। कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डा संजीव कुमार गर्ग ने बताया अन्य किसान भाईयों को इन शिमला मिर्च उत्पादक किसानों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर इसी तरह शिमला मिर्च का बीज खरीदकर अगले रबी मौसम 2024-25 में शिमला मिर्च का उत्पादन करना ।

अप्रैल और मई में की जा सकती है गन्ने की बोवनी

भोपाल। गन्ना एक प्रमुख नकदी फसल है। इसकी खेती उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में बड़े पैमाने पर की जाती है। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि गेहूं की कटाई के बाद अप्रैल में भी गन्ना लगा सकते हैं। इसके लिए उपयुक्त किस्म सीओएच-35 व सीओएच-37 है। ग्रीष्मकालीन गन्ने की बुवाई उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा एवं उत्तराखंड में अप्रैल व मई में की जाती है। अगर आपने पहले से गन्ना लगाया हुआ है तो उसमें आवश्यकतानुसार फसल की मांग के अनुरूप सिंचाई एवं गुड़ाई करते रहें। जिन खेतों से गन्ने का बीज लेना है, उन खेतों में बीज लेने से 5-7 दिनों पूर्व सिंचाई करें। बसंतकालीन गन्ना जो फरवरी में लगा है, में 1/3 नाइट्रोजन की दूसरी किश्त 1 बोरा यूरिया अप्रैल में डाल दें एवं खेत में खाली स्थानों को पोरिया या नर्सरी में उगाएं गए पौधों से भर दें। गन्ने की बुवाई से पहले खेतों को अच्छी तरह से समतल कर लें। गन्ने की फसल खेत में 2-3 वर्षों तक रहती है। शीघ्र एवं कम अवधि में पकने वाली फसलों जैसे मूंग, उड़द एवं लोबिया को गन्ने की दो पंक्तियों के बीच में बो सकते हैं। इससे प्रति इकाई क्षेत्र अतिरिक्त लाभ के अलावा मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ा सकते हैं। इस मौसम की गन्ने की फसल के लिए खेत को जुताई करके भलीभांति तैयार कर लें। बुवाई के लिए लगभग 35,000-40,000 गन्ने की तीन आंख वाले टुकड़ों की आवश्यकता होती है। इसके लिए 5-6 टन गन्ने का बीज पर्याप्त होता है. पंक्ति से पक्ति की दूरी 75-90 सेमी के अंतराल पर 10-15 सेमी गहरा कुंड डेल्टा हल से बनाकर बोया जाता है। गन्ना कटर प्लांटर के द्वारा केवल 5 श्रमिकों की मदद से एक हेक्टेयर की बुवाई कर सकते हैं। बिना कटर प्लांटर के यह सामान्य तौर पर 30-40 श्रमिकों द्वारा की जाती है। इसके साथ ही गन्ना प्लांटर के द्वारा एक दिन में 2 हेक्टेयर की बुवाई कर सकते हैं। अच्छे उत्पादन के लिए बुवाई से पूर्व गन्ने के सेट को कवकनाशी जैसे कार्बेन्डाजिम 0.2 प्रतिशत से 15 मिनट तक उपचारित करने से स्मट रोग को रोका जा सकता है। दो आंखों वाली या तीन आंखों वाली पोरियों को 6 प्रतिशत पारायुक्त ऐमीसान या 0.25 प्रतिशत मैंकोजेब के 100 लीटर पानी के घोल में 4-5 मिनट तक डुबोकर लगाएं। गन्ने में 150-180 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन, 80 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर फॉस्फोरस और 60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पोटाश प्रयोग करना लाभदायक होता है, लेकिन उर्वरक मैनेजमेंट मिट्टी की जांच के आधार पर ही करना चाहिए।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)